

कहवाक इच्छा तँ होइत अछि, किन्तु चाहितो किछु कहि नहि पबैत छियह । आजुक युग-जमाना बड़ विचित्र भऽ गेलैक अछि । सम्बन्धक पवित्रतापर आजुक मनुष्यकेँ विश्वास रहिये ने गेलैक अछि । एकक प्रति दोसर सतत शंकाए बनल रहैत अछि । मनुष्य बेसी सुसंस्कृत भेल अछि । मनुष्यक सभ्यता द्रुतगतिये विकसित भऽ रहलैक अछि । आजुक मनुष्य अपन बुद्धिक बलें प्रकृतिपर ताहि रूपेँ आधिपत्य स्थापित कयने जा रहल अछि जे एकर अहं एकरा अपने खयने चल जा रहल छैक आ एकरा भीतर निवास करैत मनुष्यता किकिहारि मारि रहल छैक । तखन पवित्रता नामक वस्तुसँ बाहरी आड-म्बर छोड़ि आन्तरिक स्वच्छताक बोध कोना होउक ?

जेना पैघ-पैघ नगरमे भूगर्भ दऽ कऽ बड़का-बड़का मोड़ी बहैत छैक, ओकरा भीतरमे दुनियाँ भरिक पूति-प्रवाह अनवरत बहैत जाइत छैक, ओहिमे अगणित पिलुआ जन्म लैत अछि, पोषित होइत अछि आ ओहि सड़ल गन्हाइत प्रवाहमे अपनाकेँ पूर्ण मुखी बुझैत रहैत अछि; ओकरो अपना प्राणक प्रति ओहने ममत्व रहैत छैक जेहन ममत्व हम, तो अर्थात् मानव जाति अपना प्राणक प्रति पोसने रहैत छी; फेर ओहि मोड़ीक ऊपर सिमटीक जमाओल अथवा पाथरक बनाओल चिक्कन, साफ झँपना सन लागल रहैत छैक । आ ओहिपर दऽ चलनिहार लोककेँ भितरका सड़ल पूतिप्रवाह अथवा ओहिमे जन्म लेने असंख्य पिलुआक कोनो पता नहि रहैत छैक । ठीक तहिना आजुक भौतिक-वादी सभ्यतामे पालित मनुष्यक स्थिति छैक । ऊपरसँ सभ्यतारूपी ओ सिमटीवला झँपनासँ झँपल अछि, आ ओकरा अन्तरमे कलुषमय विचार-क गन्दगी बहै रहल छैक आ अगणित

प्रतिक्रिया (श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर')

मनोविकारक पिलुआ ओहिमे सहसह करैत रहैत छैक ।

लगैत अछि जे तो हमर दुर्बलता बनि गेलाह अछि । हँ, एकरा दुर्बलता छाड़ि आर किछु नहि कहल जा सकैत छैक । ओना तँ एहि छोट सन जीवनमे कतेक लोक आयल, कतेक लोक गेल । जेना मनुष्यकेँ क्षणिक सुख-दुःखक अनुभव होइत छैक, हमरो भेल, मुदा तो जखन एहि ठामसँ चल जयबाक चर्चा करैत छह तँ हमरा अन्तरमे विहाड़ि अयबाक पूर्व जेना स्तब्धता व्याप्त भऽ जाइत छैक, तहिना भऽ जाइत अछि आ बूझि पड़ैत अछि जे तोहर डेग ओमहर उठतह आ हमर अन्तरक स्तब्धता विहाड़ि बनि ने जानि हमरा कोनो वृक्ष जकाँ कतऽ लऽ जाकऽ धराशायी कऽ देत । तकर बाद हमर की होयत ?

ई सर्वविदित आ साधारण बात अछि जे ई संसार स्वार्थी अछि । जखन पिता पुत्रक सम्बन्धमे आंशिक स्वार्थ रहैत छैक तखन भाइ-भाइ, मित्र-मित्र, पति-पत्नी आदिक सम्बन्ध जँ स्वार्थक भित्तिपर टाढ़ रहैछ तँ से कोन आश्चर्यक बात ? गुरु शिष्यक बीच तँ आइ सम्बन्धक कोनो मान्यतो नहि छैक ।

मुदा हम जखन तकैत छी जे हमर सेवामे तोहर की स्वार्थ भऽ सकैत छह तँ किछु देखि नहि पड़ैछ । एहि सेवाक प्रतिदान रूपमे हम ने किछु देलियह अछि आ ते देबाक कोनो योग्यते अछि । तखन लाज होइत अछि, बूझि पड़ैत अछि जे हम बहुत पैघ स्वार्थी छी ।

तोहर कहव यँह छह कि नै, जे ई गांधीजी द्वारा निर्मित युग धर्मीक । आजुक लोककेँ सेवा धर्म अपनयबाक चाहिएक । मानवताक सेवा । मुदा हमरो जन्म तँ एही युगमे भेल अछि । हमरोतँ सेवार्थ अपनयबाक चाही । तखन एकदिसाहे सेवा लेनिहार तँ अवश्य पापक भागी होयत । मुदा हम छी जे एकदिसाहे सेवा लेने चल जा रहल छी । तखन यदि संसार हमरा पापी कहय, स्वार्थी कहय तँ तकरा अनुचित कोना कहल जा सकैत छैक ?

भारतीय शास्त्रमे (यद्यपि आजुक युगमे शास्त्रक गण्य करब पिछड़ल, पछुआयल लोकक लक्षण मानल जाइत छैक) लिखल छैक जे वंश दू प्रकारक होइत छैक विद्यासँ आ जन्मसँ (वंशो द्विधा विद्यया जन्मन च) ताहूमे शास्त्रकार विद्यावंशकेँ प्राथमिकता देने छथिन । मुदा हमर भारतवर्ष अछि जे आजुक युगमे ओहि दिशामे नहि तकैत अछि जाहि दिशामे सूर्य उदित होइत छथिन आ संसार प्रकाशमान भऽ उठैत अछि, अपितु एकर आँखि ओहि दिशामे लागल रहैत छैक जेमहर सूर्य डुबैत छथि आ चारू भाग अन्धकार पसरि जाइत अछि । यँह एकर आदर्श छैक, एहीमे ई अपन उत्थान बुझैत अछि, एहीमे जीवनक सार्थकता बुझैत अछि । आ तोरो जन्म एही भारतमे आ एही युगमे भेल छह, पुनि तोरा हृदयमे यदि कोनो भ्रान्ति होअह तँ से अस्वाभाविक नहि कहल जा सकैछ । तेँ हमरा अपन स्थिति स्पष्ट कऽ देब आवश्यक प्रतीत भेल ।

वशरथकेँ रामक वियोगक अवधि निश्चित छलनि, किन्तु ओ प्राण धारण नहि कऽ सकलाह, हम तँ अनन्त कालक हेतु से सहि चुकल छी । तथापि प्रतिक्रिया स्वरूप कदना, अजल कदना अन्तश्चेतनाकेँ भसियोने चल जाइत अछि । अपने ओहीमे डूबि जाइत छी । डूबले रहलामे सुखक अनुभव तोइत अछि ।

तोरा आँखिमे ई नोर किएक छह ? हमरा तोरा प्रति कोनो अविश्वास नहि अछि, किन्तु भ्रान्ति तँ पूछिकऽ नहि होइत छैक, ओ तँ जेना लोककेँ चोरा छवि दैत छैक आ अकस्मात् पीठमे ददं होमऽ लगैत छैक तहिना अकस्मात् भ्रान्ति उत्पन्न भऽ जाइत छैक आ मानसिक दर्द आरम्भ भऽ जाइत छैक ।

हमरा होइत अछि जे हम तोरा संग अन्याय करैत छियह । तोँ कखनो अकच्छ भऽ जयबाक पूर्ण अधिकारी छह, मुदा हम पहिने कहि चुकल छियह जे तोँ हमर दुर्बलता थिकाह । प्रातःकाल सूतकऽ उठला उत्तर पहिल शब्द हमरा मुँहसँ बहराइत रहल अछि—'गोविन्द गोविन्द हरे मुरारे' । आब एही संग हमर आँखि कूदिकऽ तोरा खिड़कीपर चल जाइत अछि आ जखन तोहर मसहरी तनले देखैत छियह तँ मोनमे होइत अछि 'गोविन्द एखन धरि मुतले अछि । एखन परीक्षा चलि रहल छैक । प्रायः बेसी राति धरि पड़ैत रहल होयत । सबेर निम्न नहि टुटतँक तँ परीक्षा भवन जयबामे देरी भऽ जयतँक । फेर आँखि घड़ीपर दौड़ि जाइत अछि ।

अरे राम ! छी बजबामे बीसे मिनट बाँकी छैक । साते बजेसँ परीक्षा छैक । हड़बड़ेमे तैयार भऽ परीक्षा भवन गेलापर चंचल वृद्धि रहने

गड़बड़ होयबाक सम्भावना रहैत छैक ।

हमर तँ नुनासँ अभ्यास रहल अछि सूर्योदयसँ पहिने उठि जाइ । हमर पिताजी कहल करथिन जे प्रकाशपुंज सूर्यक उदय भेलो उत्तर जे सुतले रहैत अछि तकरापर कृपा करैत काल सरस्वतीयो ओघाय लगैत छथिन ।

हमरा तँ पिताजीक पूजाक हेतु फूल, वेलघात, दूभि, तुलसी तोड़िकऽ आनव अनिवार्य रहैत छल । सूर्यक प्रथम किरण बुद्धि रूपी धरतीक हेतु खाद थिकैक । ई खाद जे अपना बुद्धिक खेतमे नहि देलक तकर खेत उस्सर किएक नहि होयतैक ? हमरा फूल तोड़बाक साथे सूर्योदयसँ पूर्व उठऽ पड़िते छल । ओ संस्कार बनि



श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

गेल अछि । पूजा तँ हमर बाबूजी करैत छलाह, हम तँ ओही संस्कारक ओ विधि पूरा करैत छी । जकरा सूर्योदय कालमे सूतल देखैत छिएक, इच्छा होइत अछि तकरा उठा दिऐक, मुदा सब की ई पसिन्न करत ?

तो' अवश्य पसिन्न करबह, नहिबो' पसिन्न करह, तथापि तोरा उठा देवाक बहुत इच्छा होइत अछि । एह तरहें तोहर कयल सेवाक किछु प्रतिदान दऽ सकियह, मुदा जनैत छह, शरीरक ई असमर्थता मोनके' छटपटा दैत अछि । सोचऽ लगैत छी—आइ ई

शरीर एहन भऽ गेल जे अपन भार-वहन अपने नहि कऽ सकैत अछि । एहन शरीर भार थिक, एहन जीवन अभिशाप थिक ।

तोरा नहि बूझल होयतह । हमरा परिवारक जे सदस्य हमरा संग रहि रहल छथि, आइ धरि एना ओछाओन धयने नहि देखने छलाह । स्वावलम्बी जीवन वितौनिहारकेँ जखन एना अनकर मुँह ताकऽ पड़ैक तँ तकर मानसिक व्यथा क्यो सहृदय अनुमान कऽ सकैत अछि ।

बैसल-बैसल, नहि नहि, पड़लो पड़ल किछु पड़ि लेब हमरा आँखिकेँ अनसोहात लगैत छैक, बाँहि एकटा दैनिको पत्रक भार उठयबाक हेतु प्रस्तुत नहि । तखन होइत अछि जे तो' रहितह तँ पढ़िकऽ मुना दितह ।

तो' परीक्षा-भवनसँ अबैत छह आ हमरा बिनु कहनहि पत्र बाँचिकऽ मुनाबऽ लगैत छह । तखन होइत अछि जे परीक्षार्थीक समय अमूल्य होइत छैक । एखन तोहर समय लेब तोरा प्रति अन्याय करब थिक । इच्छा होइत अछि, कहि दियह जे आव पढ़ह गऽ, मुदा नहि कहैत छियह, नीक जे लगैत अछि समाचार सब मुनैत ।

एतबे नहि, तोरा हमर चिन्ता रहैत छह, डेराभे तरकारी छैक कि नहि ? डाक्टरसँ दवाई दऽ पूछब आवश्यक । चीनीक सर्वत पीबऽ कहने छथि । चीनी दुर्लभ छैक । ऊपर तँ पातालोसँ करवाक अछिये । ई चिन्ता तोरा किएक ? बे' कहैत छह एकर चिन्ता तो' करह । मुदा तोरा चिन्ता रहैत छह । एक परीक्षार्थीकेँ परीक्षाक चिन्ता छाड़ि सर्वथा निश्चिन्त रहबाक चाहिएक । से जनितो ई निरर्थक चिन्ता बेसाहब, से किएक ? मुदा तो' से बेसाहब रहलह ।

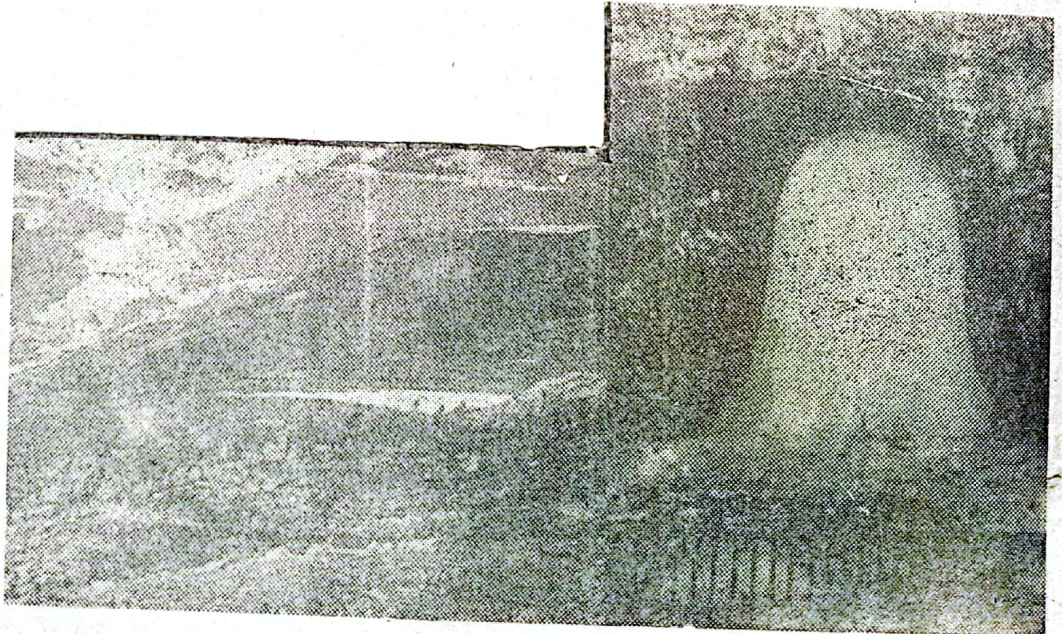
तो' विदवास नहि कऽ सकह, मुदा सत्य यँह थिकैक । एकान्त क्षणमे पड़ि गेला उत्तर आँखि सजल भऽ उठैत अछि । हमरा होइत अछि—हमरा पूर्वक कोनो सम्बन्ध अछि, अवश्य अछि । आइ यदि ललिताक भाय जीवैत रहितैक तँ तोरे कयसक, तोरेसन स्वस्थ, तोरे सन गोरनार, तोरे सन नंग धड़ग पाँच हाथक भऽ गेल रहैत । आ तखन होइत अछि जे प्रायः ओकरे दोसर रूपमे भगवान हमर सेवा करवाक हेतु तोरा पठा देलथुन अछि ।

तोहर परीक्षा समाप्त होइत छह । तोरा गाम जयबाक छह ।

जयबेक चाहियह । दोआ कौड़ी तँ सधिये गेल होयतह । दवाईक दामो तँ ओहि दिन अपने खर्चमेसँ दऽ देने छलहक । हम तँ ओछाओनसँ उल्ले उत्तर तकर प्रबन्ध कऽ सकब ।

तो' हमर मानसिक प्रतिक्रिया जानऽ चाहैत छह ? तोहर जयबाक कार्यक्रममे कोनो व्यवधान उपस्थित करब हमरा हेतु कोना सम्भव भऽ सकैत अछि ? यदि से करवाक चेष्टा हम करैत छी तँ हमर स्वार्थ हमरा अपने आँखिमे गड़ऽ लागत । किन्तु प्रतिक्रिया आन भऽ की सकैत अछि ?

दशरथकेँ रामक विधोगक अवधि निश्चित छलनि, किन्तु ओ प्राण धारण नहि कऽ सकलाह । हम तँ अनन्तकालक हेतु से सहि चुकल छी । तथापि प्रतिक्रिया स्वरूप करुणा, अजस करुणा अन्तश्चेतनाकेँ भसियौने चल जाइत अछि । अपने ओहीमे डूबि जाइत छी । डुबले रहलामे सुखक अनुभव होइत अछि । अपनाकेँ विसरि जाइत छी, पुनि संसारकेँ विसरब तँ स्वाभाविक थिक, मुदा ई की ? अपनाकेँ विसरितो, संसारकेँ विसरितो आइसँ बीस वर्ष पहिलुक ओ घटना, जहिया ललिता भायक मृत्युपर आडनमे ओषडाइत छल, तोरा देखिकऽ मिथ्या वृत्ति पड़ैत अछि ।



हिमनिर्मित अमरनाथक चमत्कारपूर्ण शिवलिंग ।

आइ जखन ई अकांग्रेसी सरकार

उर्दू के भूत जकां माथपर सवार करवाक स्थिति उत्पन्न कयलक अछि, आइ जखन विहारक एक मात्र प्राचीनतम आओ साहित्य श्रीसम्पन्न भाषा मैथिली क्रमशः प्राथमिक शिक्षासँ लऽ उच्चतम शिक्षा पी-एच. डी. धरिक हेतु स्वीकृति प्राप्तकऽ चुकल अछि आ केन्द्रीय सरकारक एकमात्र प्रतिनिधि संस्था साहित्य अकादमी एकरा स्वतन्त्र भाषाक रूपमे मान्यता दऽ चुकल अछि आ भारतीय संबिधानक अष्टम अनुसूचीमे प्रवेश प्राप्तिक हेतु अष्टम अनुसूचीक वज्र-कपाटपर भक्का देब आरम्भ कयलक अछि तखन जा कऽ भोजपुरी भाषाभाषीक कान ठाढ़ भेलनि अछि, आखि फुजलनि अछि आ स्वतन्त्र भाषाक रूपमे मान्यता प्राप्तिक कामना हृदयमे जगलनि अछि ।

ओना मगही भाषाभाषीमे किछु प्रबुद्ध लोक अवश्य छथि जनिका हृदयमे बहुत पहिनिहसँ अपना भाषाक रक्षा करवाक चिन्ता रहलनि अछि आ ओ लोकनि हिन्दी द्वारा मगहीकेँ आत्मसात् करवाक प्रयत्नसँ भीतरे-भीतर क्षुब्ध रहैत अयलाह अछि, किन्तु विद्याबुद्धि सम्पन्न उच्च पदस्थ लोक एकरा महत्त्व नहि बूझि मातृभाषाक उपेक्षे करैत रहलाह जाहि कारणेँ मगहीक आन्दोलनक आगि भूस्साक आगि जकां नहूँ-नहूँ भीतरे-भीतर जरैत रहल अछि, किन्तु भोजपुरी भाषी तँ अपना मातृभाषाकेँ हिन्दीक अन्तर्गत अन्तर्भुक्त होइत देखि प्रसन्ने होइत रहलाह । तखन एकर सुरक्षाक आयास अथवा चिन्ता किएक करितथि ? तखन यदि आइ सेहन्ता लागि रहल छनि तँ तकर एकमात्र उद्देश्य थिक प्रतिस्पर्द्धामे अनेक भाषाकेँ ठाढ़ कऽ सभ भाषाक प्रगतिक मार्गपर अवरोध उपस्थित कऽ देल जाय । यदि से नहि सत्य, सत्य ई जे आबे मातृभाषाक महत्त्वक परिज्ञान भेलनि अछि तँ ई विहारक हेतु शुभ-लक्षण मानल जायत ।

अद्यावधि विहारक भाषास्थितिक सम्बन्धमे जे सत्यता अछि ताहिपर पर्दा पड़ल अछि । ओहि पदकेँ उठयवाक हेतु राजनीति-सम्पुटित साहित्यिक नेतालोकनि उद्यत नहि छथि । उद्यत होथु कोना ? यदि

विहारक मातृभाषा हिन्दी थिक ?

- श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' -

सत्यपरसँ आबो पर्दा उठा देल जाय तँ एखनो जाहि नामपर नोट भजा-भजा मोट होइत जा रहल छथि से मुख हाथसँ पिछड़ि नहि जयतनि ?

विहारक एहि दुवँशाक मूल उत्तरदायित्व एहने तथाकथित हिन्दी सांभ्राज्यवादक पोषकलोकनिक माथ-पर छनि जे विहारक माटि-पानिसँ पोषित एवं संवर्द्धित सभ भाषाकेँ हिन्दीक डेङ्कतर दाबि एहि भूभागक मौलिक विकासक मार्गकेँ अवरोध कऽ गेलथिन । स्वार्थ साधनक इरोतमे त्यागक नारा दऽ भविष्यकेँ अन्धकारक गर्तमे धकेलि दैत गेलथिन । आवऽ बला युग हिनकालोकनिक एहि कुत्सित कर्मक हेतु हिनका सभक भत्सना करैत वाग्वाणक वर्षा करबे करतनि ।

यदि निष्पक्षतापूर्वक विचार कयल जाय तँ ई एकदम स्पष्ट अछि जे विहारक कोनो भागक मातृभाषा

किएक ने हो, हिन्दी कथमपि नहि थिक से निर्विवाद सत्य अछि ।

ईहो अस्वीकार नहि कयल जा सकैत अछि जे सम्पर्क भाषाक रूपमे विहारक विभिन्न भाषाभाषीलोकनिक बीच हिन्दीए प्रचलित ओ समादृत रहल अछि । हँ, ई भिन्न बात थिक जे ओहि हिन्दीपर आंचलिक भाषा सभक ध्वनि अपन-अपन प्रभाव रखने रहल अछि जे स्वभावसिद्ध थिक ।

ईहो सर्वथा सत्य थिक जे उत्तर भारतक पूर्वीय सीमासँ लऽ पश्चिमीय सीमाधरि एक प्रान्तक लोककेँ दोसर प्रान्तक लोकसँ समीप अनबामे अथवा अपना अभिप्रायकेँ अभिव्यक्ति देबामे हिन्दीए सहायक रहल अछि । यँह कारण थिक जे संस्कृत-प्राण मिथिला जहिना मैथिली साहित्यक श्रीवृद्धि करब अपन कर्तव्य बुझैत आयल तहिना हिन्दीयोक सेवा करब अपन उत्तरदायित्व । तँ अखिल भारतीय

विद्वद्विभूत भाषाशास्त्री डाक्टर ग्रिअर्पन जे एक विदेशी छलाह, पूर्वाग्रहसँ सर्वथा मुक्त, जे भारतीय भाषाक सर्वेक्षण कऽ एक अद्भुत काज कऽ गेल छथि तनिका द्वारा कयल गेल सर्वेक्षणकेँ आइ उपेक्षित कऽ एक एहन संस्था आ एक एहन व्यक्ति जे पूर्वाग्रहसँ युक्त अछि तकरा द्वारा पुन सर्वेक्षण करयवाक घोषणा जे विहारक उपमुख्यमंत्री कयलनि अछि तकरा पृष्ठभूमिमे राजनीतिक दुरभिसन्धि छोड़ि आन किछु नहि भऽ सकैत अछि ।

हिन्दी नहि थिक । हँ, किछु मातृहन्ता अपना नागरिक जीवनमे हिन्दीकेँ मातृभाषाक रूपमे स्वीकार करवाक दुराग्रह अवश्य करैत रहलाह अछि आ अपना मातृभाषाक चितापर लिट्टी पका-पका खाइत रहलाह अछि । एहिमे मैथिलीभाषीजन सेहो किछु छथि । किन्तु हुनकालोकनिक जे स्वजन-परिजन, बन्धु-बान्धव ग्रामांचलमे रहैत छथिन हुनकालोकनिक मातृभाषाक स्थान हिन्दी नहि लऽ सकलनि अछि । ओ भने मैथिली, मगही वा भोजपुरीक विकृते रूप

हिन्दी साहित्यकेँ विहारक जे किछु अवदान छैक ताहिमे पचास प्रतिशतसँ किछु अधिक मिथिलाक योगदान कहल जा सकैत अछि । ई भिन्न बात थिक जे आइ मैथिलीभाषी होइतो जे हिन्दीक महारथी कहबैत छथि तनिका लोकनिकेँ मातृभाषाक रूपमे मैथिलीकेँ स्वीकार करबामे असौकर्यक अनुभव होइत होइनि ।

राजभाषाक रूपमे मैथिलीभाषी क्षेत्र हिन्दीक विरोध कहियो नहि कयलक, अपितु शिरोधार्य करैत रहल,

किन्तु हिन्दीक तथाकथित कट्टर समर्थकलोकनि तकरा मैथिलीभाषीक दुर्बलता बूझऽ लगलाह आ सम्पूर्ण मैथिलीकेँ हिन्दीक पेटमे गोड़ि जयवाक पड्यन्त आरम्भकऽ देलनि ।

बहुतो दिनसँ एकमात्र देवनागरी लिपिकेँ भारतीय सभ भाषाक हेतु ग्रहण करवाक विचार प्रकट कयल जाइत रहल अछि आ एखनो कयल जा रहल अछि । वस्तुतः एक लिपि भेला उत्तर जाहि-जाहि भाषाक उद्गम संस्कृतसँ भेल अछि से सभ भाषाभाषी एक दोसराक भाषाकेँ बुझबामे सौकर्य प्राप्त करताह आ परस्पर भावक आदान-प्रदानमे परम सुविधा भऽ जायत । एहि उदार दृष्टिकेँ समक्ष राखि मिथिला तिरहुता लिपिक विकासकेँ अनछा देलक ।

यदि ककरो ई भ्रम होइनि जे तिरहुतामे छापाखानाक विकास नहि होयवाक कारणेँ मैथिलीभाषी वाध्य भऽ देवनागरी लिपि स्वीकारकऽ लेलनि तँ तनिकालोकनिक भ्रमकेँ आखिमे आड'र दऽ दूर कयल जा सकैत छनि जे तिरहुताक सहोदरा बंगला लिपिक छापाखाना देवनागरीक छापाखानासँ बहुत पछुआयल नहि छल । मिथिलावासी प्रसन्नता ओ सुविधापूर्वक ग्रहण कऽ सकैत छलाह । तिरहुता एवं बंगलामे किछु अक्षर मात्रमे अन्तर अछि । किन्तु से नहि कऽ मिथिला देवनागरी लिपिकेँ स्वीकार कयलक ।

यद्यपि देवनागरीयो हिन्दीक अपन लिपि नहि थिक । एकरा हिन्दीक लिपि कहब सत्यक अपलाप होयत । देवनागरीक वर्ण विन्यास ओ स्वरक ध्वनि संस्कृतक स्वरक अनुरूप अछि, हिन्दीक अनुरूप नहि, तथापि जे हेतु हिन्दी एहि लिपिमे लिखल जाय लागल आ संस्कृतोक्त ग्रन्थसभ एही लिपिमे मुद्रित होवऽ लागल तेँ बंगला लिपिकेँ ग्रहण करबासँ अधिक श्रेयस्कर देवनागरी लिपिकेँ ग्रहण करब बुझलक । हिन्दी भाषाक प्रति मिथिली क्षेत्रकेँ स्वाभाविकेँ अनुराग रहलैक अछि । मुदा अपना लिपिक परित्याग तथा हिन्दीक प्रति सहज अनुरागक पुरस्कार स्वरूप हिन्दीक तथाकथित कट्टर समर्थकलोकनि मैथिलीकेँ हिन्दीक बोली कहब आरम्भ कयलनि (जे

अनभिज्ञतावश विहारक शिक्षामंत्री पुनः एहि वर्ष दोहरीलनि अछि) आ सम्पूर्ण विहारक हिन्दीभाषी प्रान्त घोषित कऽ देल गेल ।

ओही ठाम जे जे प्रान्तीय भाषा अपना लिपि धरने रहल तकरा सभ दिन आखि उठयवाक साहस हिन्दीक समर्थकलोकनिके नहि भऽ सकलनि, एतेकधरि जे हिन्दीएक शैलीविशेष मात्र उर्दू अपना हेतु फारसी लिपिके ग्रहण करब श्रेयस्कर बुझलक तँ ओकरा हिन्दीक अन्तर्भूत नहि बूझि संविधानमे फराके एक टा आसन दऽ देल गेलक आ हिन्दीसँ सर्वथा भिन्न प्रकृति रखनिहार मैथिली छल तकरा आत्मसात् करवाक हेतु विद्यापतिक रचनाके हिन्दी पद्य संग्रहमे संकलित कऽ हिन्दी साहित्यक इतिहासमे मैथिलीपर हिन्दीक मोहर मारि देल गेल जाहिसँ भाषा साहित्यक इतिहासक अध्येता दिग्भ्रान्त भऽ जाइत गेलाह ।

एहि नग्न सत्यक उद्घाटन 'हिन्दी साहित्यके' अस्सी वर्ष' नामक ग्रन्थमे निष्पक्ष इतिहासकार श्री शिवदान सिंह चौहान जखन कयलनि तँ हिन्दी साम्राज्यवादक एहि षड्यन्त्रसँ सम्बन्ध रखनिहारलोकनि उकठ करऽ लगलथिन ।

विश्वविश्रुत भाषाशास्त्री डाक्टर ग्रिग्रसन, जे एक विदेशी छलाह, पूर्वाग्रहसँ सर्वथा मुक्त, जे भारतीय भाषाक सर्वेक्षण कऽ एक अद्भुत काज कऽ गेल छथि तनिका द्वारा कयल गेल सर्वेक्षणकेँ आइ उपेक्षित कऽ एक एहन संस्था आ एक एहन व्यक्ति जे पूर्वाग्रहसँ युक्त अछि तकरा द्वारा पुनः सर्वेक्षण करयवाक घोषणा जे विहारक उपमुख्य मन्त्री कयलनि अछि तकरा पृष्ठभूमिमे राजनीतिक दुरभिसन्धि छोड़ि आन किछु नहि भऽ सकैत अछि । एक बेर जाहि असत्यक स्थापनाकऽ चुकल छथि हिनकालोकनि ताहि असत्यकेँ सत्य सिद्ध करयवाक प्रयासमे सभ भिड़ल छथि । ई घोषणा तकर पुष्टि करैत अछि ।

किन्तु आव जे युग आवि रहल अछि अथवा ई कहल जाय जे आवि धमकल अछि, से एहि साम्राज्यवादी नीतिकेँ अधिक दिन नहि चलऽ

देतनि । साम्राज्यवादकेँ कोनो नाडि सिध नहि होइत छैक । अनकर शोषणसँ अपन पोषण करवेकेँ साम्राज्यवाद कहल जाइत छैक ।

एतेक दिनक वादे किएक ने हो, विहारमे भोजपुरी सुगवुगा रहल अछि। भोजपुरी क्षेत्र दू राज्यमे तँ विभक्त अछि जे नेपाल तराइक एक भागमे सेहो बाजल जाइत अछि, आइ नहि काहि, जनताक एहि आकांक्षाकेँ अधिक दिन दाबल नहि जा सकैत अछि । राजस्थानक सांसदलोकनि राजस्थानीकेँ साहित्य अकादमीमे मान्यता देअयवाक हेतु प्रयत्नशील भऽ गेलाह अछि । अतिरिक्त लोकक समर्थन हुनकालोकनिकेँ प्राप्त छनि ।

हमर विश्वास अछि जे अवध अपना तुलसीक तथा ब्रज अपना सूरक आ बुन्देलखण्ड अपना भूषणक गौरवकेँ स्मरण करैत विद्रोहक झण्डा उठयवे करत । एक साम्राज्यवादक अन्त कऽ दोसर साम्राज्यवादक चाडुर मे अपनाकेँ बहुत दिनधरि फँसल रखवाक स्थितिमे जनमत नहि अछि ।

अतः हिन्दीक कट्टर समर्थकलोकनिकेँ यदि हिन्दीकेँ राजभाषाक प्रशस्त पदपर प्रतिष्ठित करायब अभीष्ट होइनि तँ सत्यपरसँ पर्दा उठावथु आ आबो श्री शिवदान सिंह चौहान द्वारा देल तर्ककेँ आगाँ राखि राजभाषाक हेतु हिन्दीक योग्यता लोककेँ बुझवथुन । आबो चेतथु आ मातृभाषाक चि मारकेँ खाली करैत सम्पर्क भाषाक रूपमे, जे यथार्थ रूप धिकैक हिन्दीकेँ प्रश्रय देथुन । यदि एहि प्रकारेँ साम्राज्यवादी नीतिक परित्यागकऽ सकलाह हिनकालोकनि तँ हिन्दीक कल्याणक संगे राष्ट्रक कल्याण सम्भव भऽ सकत ।

एम्.एल. एकेडमी लहेरियासराय
दरभंगा ।

गीत

: श्री उपेन्द्र 'दोषी' :

साँस आ वासना दण्ड थिक, प्राण-जीवन विधिक बंचना ।

रूप निघटल हमर,
मोह दूटल सगर,

लुप्त जीवन-अरुण-अरुणिमा, शेष हम आ हमर चेतना ।
प्राण-जीवन विधिक बंचना ॥

जँ ओ रहस्यथि निकट,
बात सुनितथि विकट,

सुख मन्दिर कतऽ देवता, आव कनिकर करु अर्चना ।
प्राण-जीवन विधिक बंचना ॥

नोर पल-पल शरय,
देखु अन्तर गलय,

की कहू; के सुनत ई कथा ? दोस्र जीवन करै' अछि मना ।
प्राण-जीवन विधिक बंचना ॥

पुस्तक भंडार, अपर बाजार, राँची

श्रद्धांजलि

: श्री गणेश झा, व्याकरणाचार्य :

(प्रातःस्मरणीय डा० महामहोपाध्याय उमेश मिश्रक प्रति)

ओ छला प्रकाशक रवि-समान,
ओ छला स्वधर्मक पथिक प्राण,
ओ छला अतुल निभ्रान्त - ज्ञान,
ओ सदाचार-रत गुण-निधान ।

ओ कर्म योगकेर योगि छला,
संस्कृतिक अपन सम्पूर्ण कला,
ओ स्वाभिमानकेर विमल विभा,
ओ परम अर्चना-योग्य भेला ।

छल छजनि न कनिको मनहि लेश,
ओ तपःपूत मैथिलक वेश,
मण्डन ओ वाचस्पतिक शेष,
हा ! उजड़ि गेल मिथिला प्रदेश ।

छथि देव-भारती विकल-काय,
ओ विबुध-केशरी गेला हाय,
अछि कानि रहल मैथिल-निकाय,
मैथिलीक मानस भग्न-प्राय ।

छनि मुदा हुनक कल कीर्ति-गान,
पसरल जगतीमे ठामठाम-ठाम,
हे त्यक्त-देह, परमात्म-धाम,
श्रद्धांजलि-युत मम शत प्रणाम ।

बहुद्देशीय विद्यालय, सबौर, भागलपुर ।

कलश-स्थापन

: श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' :

संस्थापित हो आइ विजयघट
मार्कण्डेय-पुराण-प्रमाणित
देवासुर-संग्राम-कथाकेर पुनरावृत्तिक क्षण आयल अछि
स्मरण करथु पुनि भारतवासी
जखन देवगणपर छल संकट ।
महिषासुर अलोक्य-विजयकऽ
इन्द्रादिक-वृन्दारक गणके यज्ञभागसँ वंचित कयलक
धाकल देवक पौरुष, इन्द्रक कुलिश निरर्थक
रुद्रक प्रखर त्रिशूल बनल छल भोष जाहि क्षण
विष्णुक चक्रमुदर्शन घूर्णित मात्र होइत छल
यम कुबेर सब छोड़ि पड़यला जखन महारण
सर्वदेव सम्मिलित शक्तिएँ धधकल क्रोधानलक ज्वालसँ
आविर्भूता भेली चण्डिका,
तखन अमुर विध्वंसक मुखमे गेल सबशे ।
महिषासुरक वंशधर पुनि अवतीर्ण भेल अछि
देवक जीवन-पथ फेरो संकीर्ण भेल अछि
रक्तबीजकेर रक्तक बिन्दु दिकीर्ण भेल अछि
शान्तिक पथ जग भरिक कण्टकाकीर्ण भेल अछि
आइ देशके पड़ल प्रयोजन आविर्भाव पुनः हो शक्तिक
मुघटित सैन्य व्यूह संयोजन, देशक प्रति निदछल अनुरक्तिक
नव उत्साह-सिन्धुमे ज्वारि उमड़ि आयल अछि
दीपित यौवन देखि शत्रुदल घबड़ायल अछि
जागि गेल रणचण्डिकाक पुनि रक्त-पिपासा
जागि गेल अछि बलिदानिक मनक अभिलाषा ।
ई थिक सत्य न शिव कखनहुँ बरंरता चाहथि
रक्त-रंजिता धरा मुदा उबरंरता चाहथि
मुण्डमालिनीकेँ चाही नव मुण्डक माला
अमुर दलक संहार करक हित क्रान्तिक ज्वाला ।
इत्थं यदा यदा बाधाक प्रतिज्ञा मोने
रहती कोना चण्डिका तखन कहूँ अनठौने ?
शान्ति नामपर फेर भ्रान्तिमय युद्धक वर्जन
करत न किछहुँ देश, करथि बलिदानी गर्जन
सीमित सहनक शक्ति तथा अरिदल अछि उत्कट
दृढ़ संकल्प पुनः संस्थापित करब विजयघट ।

मिश्रटोला, दरभंगा ।

विद्यापति पर्व आबितुलायल अछि । विद्यापति स्मृति पर्व अर्थात् मैथिली जागरण पर्व । जहियासँ मैथिलीमे प्रगति आयल अछि—साहित्य रचनामे प्रगति, जनसाधारणमे मातृभाषाक प्रति सतर्कतामे प्रगति, विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्व-विद्यालयमे छात्रक संस्थामे प्रगति एवं पुस्तक प्रकाशनमे प्रगति, ताहूँ पहिने एहि स्मृति पर्वक शुभारम्भ भऽ चुकल छल । एहि अवधिमे एखनधरि चारिम दशक नहि पूर भेलैक अछि, किन्तु एतबो दिनमे जाहि द्रुतगतिनँ जनजीवनमे मातृ-भाषाक प्रति चेतना अग्रबाक चाही से नहि आबि सकल अछि ।

स्वानुभूतिक आधारपर कहबाक साहस कऽ सकैत छी जे एहि पर्वक व्यापकताक संग मैथिली आन्दोलनमे जे गति आयल अछि से सर्वांशतः मैथिलीक प्रति कर्तव्य-बोध अथवा मातृभाषाक प्रति अनुराग उत्पन्न होयबाक फलस्वरूप नहि, अपितु एहि मूलमे मनोरंजक कार्यक्रम अधिकांशतः लोककेँ अपना दिस आकृष्ट करैत रहल अछि ।

विभिन्न नगरमे जीविकोपार्जन करैत जे मैथिलीभाषी जनसमुदाय छथि से पारस्परिक मेल मिलापक हेतु एक एहन पर्वक खोजमे अवश्य छलाह । एह परस्पर मेल-मिलापक आवश्यकताक अनुभवहुनकालौकनिकेँ अन्य भाषाभाषीलौकनिक पारस्परिक सौहार्द देखिकऽ भेलनि अछि । किन्तु जाहि कारणेँ आ जाहि कोनो संसर्गे एहि प्रकारक भावना आयल होउनि, ई सत्य जे एहिसँ मैथिली आन्दोलनकेँ थोड़ेक बल अवश्य भेटलैक अछि ।

एहि प्रसंग आब किछु विचारणीय प्रश्न अछि जाहिपर मातृभाषाक उत्थानक हेतु थोड़ो बहुत आत्सुक्य रखनिहारलौकनिकेँ गम्भीरतासँ सोचऽ पड़तनि । तेँ ई आशा कयल जा सकैत अछि जे एहि प्रश्न सभपर विचार कयल जायत तथा ओहि दिशामे समुचित डेग उठयबाक प्रयास सेहो कयल जायत ।

की भाषण एवं प्रस्तावपारित कयले सत्ता मैथिलीक समस्याक समाधान संभव अछि ?

जागरण पर्व

- श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

वस्तुतः स्वतन्त्रता संग्राम आरंभ होयबाक दिनसँ जे भाषण देबाक प्रथा आरम्भ भेल से दिनानुदिन ततेक बढ़ैत गेल जे अन्ततोगत्वा भाषण मात्रमे सीमित रहि गेल अछि । जेना आरम्भमे भाषणमे अभिव्यक्त विचारकेँ कार्यान्वित करबाक हेतु भाषणकर्तासँ लऽ श्रोता पर्यन्तमे एक उत्साह जगैत छल, जाहि उत्साहक प्रसादे देश राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्तकऽ सकल ओ उत्साहभाव महात्मा गान्धीक मृत्युक संगे मरि गेल । हुनक उत्तराधिकारीलौकनि मंच चढ़ि चढ़ि ततेक भाषण करऽ लगलाह जे भाषणक महत्त्व सभे धरि सीमित रहि गेल । कार्य रूपमे 'डपोरेशंसोस्मि, वदामि, नतुददामि' वला खिस्सा चरितार्थ होबऽ लागल ।

अतः निर्विवाद सत्य थिक जे आब भाषण कयलासँ अथवा सुनलासँ कोनो रचनात्मक कार्य आगाँ बढि

उत्साही युवक कार्यकर्तलौकनि गामांचलक भ्रमणकऽ यदि विद्यापति स्मृति-पर्व मनावथि तेँ ई जागरण-पर्व ओ ज्योति-पर्व भऽ सकैत अछि ।

सकत से संभव नहि । एहि हेतु जन-जनसँ सम्पर्कक प्रयोजन अछि ।

की वर्षमे एक दिन धूमधड़ाका-सँ मनोरंजक कार्यक्रम सम्पन्न कऽ हम अपन मातृभाषाक प्रति कर्तव्यपालनक दावा कऽ सकैत छी ?

प्रायः मातृभाषाक महत्त्वकेँ बुझनिहार ईहो अवश्य बुझैत छथिन जे न्याय अन्यायक प्रश्न राजनीतिमे

नहि होइत छैक । 'स्वार्थ मिडिमे जे नीति सहायक हो से न्याय थिक आ जे बाधक हो से अन्याय थिक' एही सिद्धान्तकेँ मानिकऽ चलनिहार आजुक भारतीय राजनीतिक सभ दल कार्यशील अछि । जे न्यायतः मैथिली भाषी क्षेत्रक विकासक हेतु मैथिलीक विकास परमावश्यक रहितो कोनो राजनीतिक दलक एहिसँ स्वार्थ-सिद्धि नहि होइत छैक, तेँ कोनो दल एहि प्रश्नकेँ लऽ कऽ केन्द्र वा राज्य सरकारक समक्ष न्याय देअयबाक हेतु प्रस्तुत नहि अछि ।

अतः आइ प्रयोजन अछि जे पैघ-पैघ नगरमे हजारो टाकाक व्ययसँ जे एहि पर्वक अवसरपर धूमधड़ाक कयल जाइत अछि ताहिमेसँ किछुओ अंश बाहरकऽ एक दैनिक पत्रक संचालनक हेतु कोषसंग्रह कयल जाय । अनेक औद्योगिक नगरमे ई पर्व मनाओल जाइत अछि । नागरिक जीवन व्यतीत कयनिहार लोकक हेतु दस-पाँच टाका कोनो बेसी महत्त्व नहि रखैत अछि । ग्राम्य अंचलक चेतना उद्वुद्ध करबाक हेतु आ राजनीतिक दलकेँ अपना शक्तिसँ परिचित करयबाक हेतु एक दैनिक पत्रक नितान्त आवश्यकता अछि ।

अनेक नगरमे विद्यापति भवन बनयबाक योजना अछि । कतेको ठाम एहि हेतु भूमि सेहो अर्जित कयल जा चुकल अछि, किन्तु भवन-निर्माणसँ प्राथमिकता देबाक प्रयोजन अछि चेतना निर्माणकेँ ।

मातृभाषा हो' केँ कार्यान्वित करय-बाक दिशामे एहिसँ अधिक उपयुक्त आन समय भऽ सकैत अछि ?

नवम्बर मासक मध्यमे ई पर्व अवैत अछि आ दिसम्बर नहि, जनवरीसँ अग्रिम वर्षक हेतु प्राथमिक विद्यालयक सत्र आरम्भ होइत अछि । एहि डेढ़ मासक अभ्यन्तर बिहारक राजधानीकेँ दलमलित कऽ राखब आवश्यक अछि जाहिसँ टेक्स्टबुक कमीटी मैथिलीओमे पुस्तकक प्रकाशन कऽ मैथिलीभाषी क्षेत्रक नेनाक माद-केँ पूरा कऽ सकय ।

यदि एहि पर्वकेँ एहि वर्ष राजधानीमे धमगज्जर मचयबाक रूपमे मनाओल जाय तेँ प्रायः अठसठिक जनवरीसँ प्राथमिक विद्यालयमे आंशिकी रूपमे मैथिलीक माध्यमसँ शिक्षा आरम्भ कराओल जा सकय । मैथिली आन्दोलन एखन धरि माटि पकड़ि सकल अछि ?

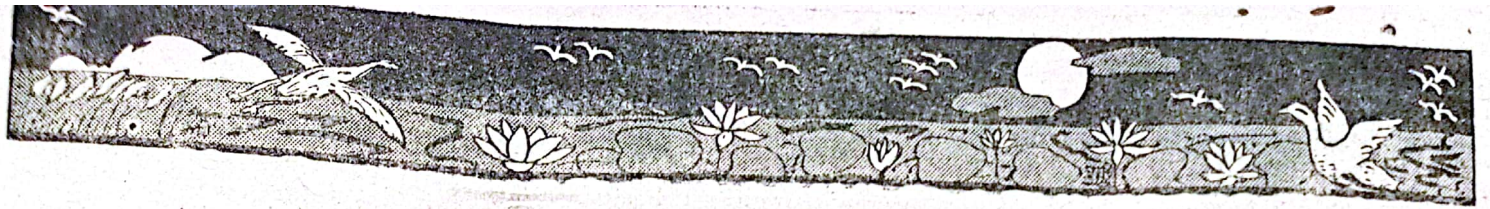
निःसंकोच भावेँ कहऽ पड़त जे गाममे रहनिहार अभिभावकलौकनिमे अधिकांशकेँ ई भ्रम छनि जे मैथिलीक माध्यमसँ पढ़ला उत्तर नेना सभक भविष्य अन्धकारमे पड़ि जयतैक । हुनकालौकनिकेँ बंगाली, मद्रासी एवं मुसलमानलौकनिक विद्या क्षेत्रमे उन्नतिक दृष्टान्त उपस्थित कऽ बुझय-बाक प्रयोजन अछि जे सांसारिक प्रारम्भिक ज्ञान मातृभाषाक माध्यमसँ पाबि गेला उत्तर नेनाक आँखि शीघ्र फुजैत छैक । तखन चेतन भेला उत्तर ओ कोनो भाषा वा कोनो विषयकेँ शीघ्रतासँ बुझवामे सक्षम भऽ जाइत अछि ।

संगहि शिक्षकलौकनि जे एहि शुभ कार्यमे, राष्ट्रोत्थानक कार्यमे बाधक भऽ रहलाह अछि तनिको-लौकनिक भ्रम दूर करब आवश्यक अछि ।

एहि हेतु उत्साही युवक कार्यकर्ता लौकनि ग्रामांचलक भ्रमण कऽ यदि ई पर्व मनावथि तेँ ई विद्यापति स्मृति पर्व जागरण पर्व ओ ज्योति पर्व भऽ सकैत अछि । एहि वर्ष एकरा ज्योति पर्वमे परिणत करबाक शुभारंभ हो, से हमर कामना ।

सरकार द्वारा प्राप्त अधि-कार प्राथमिक विद्यालयमे माध्यम

एम्. एल. एकेडमी, लहेरियासराय, दरभंगा ।



युवकसँ

: श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' :

आइ परीक्षा विवस तुलायल
अन्धकार युगयुगक बिलायल
बढ़ल प्रकाश विशा विदिशा
अगजग प्रमुदित
चुनमुन चुनमुन चुनमुना रहल
पिजड़ामे चिर दिनसँ बाहल
आत्माखपी भारतक विहग ।
को होयत प्रात, उठि औता दिनकर अम्बरमे ?
देशक कणकण को चमकि उठत ?
नहि, नहि, किछु दिनधरि अछि बिलम्ब
बल बान्हि घटा कारी कारी
जे उमड़ि रहल आ घुमड़ि रहल अछि
लज विजुरिक तरवारि ममहि मन गुम्हड़ि रहल अछि
सावधान भऽ जाउ,
अरे रे ! पहुँचल प्रबल विहाड़ि, भरल नभ,
धूलि धूसरित प्रकृति अहुरिया फाटि रहल अछि
आगाँ पयर उठयबासँ पहिने सतक भऽ जाउ
धरातल फाटि रहल अछि ।

कहवा ले' हम छी स्वतन्त्र
हमरे सभसँ संचालित अछि सम्पूर्ण यन्त्र
हमरे लोकनिक थिक माँटि पानि
जल, थल, नभ, सकल सुखक साधन
सभ किछुपर अछि अधिकार स्वतः
ई जन्मसिद्ध अधिकार
एहि ले' लड़ब, मरब,
मरि मरि कऽ अपना अधिकारक
रक्षा धरि निश्चय करब,
लड़ब, निश्चय जीवन भरि लड़ब ।

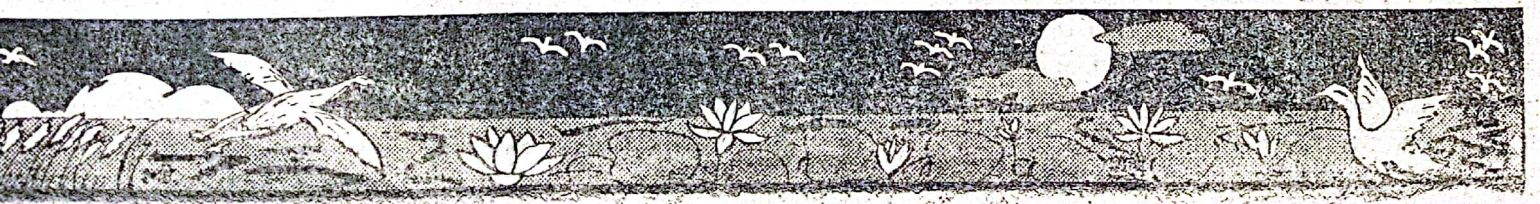
भला,

युगयुगसँ अद्विजल स्रोत प्रवाहित,
विद्यापतिक मधुर स्वरसँ सेवित, पूजित,

चन्दाक चन्द्रिकासँ धवलित,
मुरलीधरसँ मनमोह पाबि,
एखनहुँ शिथिला मिथिला प्रमुदित,
सीतारामक पद विन्यास
जन कण्ठ कण्ठसँ प्रतिध्वनित,
कविशेखर बदरीनाथ रचित
अनुपम कविता कानन कुमुमित,
किरणक मृदु किरण आलोकित
सुमनक सौरभसँ अति सुरभित,
मधुपक मधु गुंजन-अनुगुंजित,
यात्रीक रुचिर शब्दावलि
मित् नूतन भावे परिपूरित,
हरिमोहन कृत मन मोहन पदसँ
सहजहि जन मन आकषित,
संस्कृतिक भित्ति,
भाषापर बयो आक्षेप करत
से सहघ ? रहब कायर बनि ?
त्यागब आश जीवनक ?
को त्यागब विश्वास जीवनक ?

से कथमपि नहि होयत,
विरोधी वर्ग देलक भुतिआय
ताहिसँ गेलहुँ एते पछुआय
आइ भ्रमवश पुनि खत्ता खाइ
तखन कहवा ले' रहब स्वतन्त्र
रहत नहि अपन कतहु अधिकार,
युवक ! आबहु तँ कलु विचार,
जीवनक अछि नहि आन प्रकार,
उजड़ि नहि जाय बसल संसार,
चिनय तँ छी करैत कर-बढ़
रह-रक्षा ले' सभ सन्नद्ध ।

—एम्. एल्. एकेडमी, लहेरियासराय ।



उत्तर प्रदेशक दादरी नामक

स्थानपर हिन्दी तथा संस्कृत महा-विशालयक शिलान्यास करैत केन्द्रीय शिक्षामन्त्री बजलाह अछि, जे उच्च शिक्षाक हेतु अधिकतर संस्था पैघ-पैघ नगरमे अवस्थित अछि ई वांछनीय नहि कहल जा सकैछ। शिक्षा-मन्त्री एहि क्रममे ईहो बजलाह जे अवसर पाबिक हम सब कहवास कतहु नहि चुकैत छी जे भारत गामक देश थिक, एहि ठामक दू तेहाइसँ अधिक लोक गाममे जीवन निर्वाह करैत छथि, मुदा शिक्षा, संचार, सफाई आदि विषयमे हम अद्यावधि गामक सर्वथा उपेक्षे करैत आबि रहल छी।

हुनक ईहो मन्तव्य छनि जे शहरी वातावरणक चमक-दमकमे शिक्षा प्राप्त कयनिहार हमरा देशक नवयुवक गाम दिस घूरिक नहि जाय चाहैत छथि। आजुक शिक्षाकेँ ग्राम्य रूप देव परम आवश्यक अछि। अन्यथा सामान्य शिक्षाक विकासक हेतु कयल जाइत सभ प्रयास विच्छिन्न भऽ जायत। आइ जाहि प्रकारक समाजक निर्माण अपेक्षित अछि से एहि शिक्षासँ नहि भऽ रहल अछि। आजुक भारतीय नवयुवक वस्तुतः काल्पनिक आदर्शक विडूरोमे उधिराइत फिरैत छथि। अध्ययन कालक हुनक सभ अभिलाषा अध्ययन सम्प्राप्त कऽ कर्मक्षेत्रमे प्रवेश करैत देरी स्वप्न जकाँ मिथ्या भऽ जाइत छनि।

प्रश्न अछि जे शिक्षण संस्थाकेँ ग्राम्य क्षेत्रमे कोना लऽ गेल जाय ?

वस्तुतः आइ परम आवश्यक भऽ गेल अछि जे ग्राम्य जीवनसँ सम्बद्ध उन्मुक्त वातावरण, खेती, सामुदायिक विकास, ग्रामीण व्यवसाय आदिक प्रति नवयुवकक हृदयमे प्रेम, अभिरुचि तथा उत्साह उत्पन्न कयल जाय, किन्तु से शिक्षण संस्था सभ यदि शहरी क्षेत्रमे अवस्थित रहत तँ एहि वातावरणमे, जाहि ठाम सिनेमा, सँलून, केविन एवं अभिभावकत्वहीन स्वच्छन्द जीवन बितयबाक सुविधा हुनकालोकनिकेँ प्राप्त छनि, पालित भऽ पुनः ओ ग्राम्य जीवनक स्वस्थ

आजुक स्थिति ओहिसँ सर्वथा भिन्न अछि। नै ओहन शान्त वातावरणमे शिक्षण संस्थाक संचालन भऽ सकैत अछि आ नै ओहन शान्त वातावरणमे उपलब्ध अछि। यद्यपि नागरिक जीवनक अपेक्षा ग्राम्य जीवन एखनो बहुत अंशमे पवित्र अछि, किन्तु सर्वथा पवित्र, छल-छद्मसँ सर्वथा निर्लिप्त वातावरणक सर्वत्र अभावे अछि।

बहुतो दिनसँ राजनीतिक चेतनासँ असम्पृक्त भारतीय जनजीवन विषाक्त राजनीतिसँ तेना भऽ कऽ

ई कोना हो?

— श्री राधुनाथ मिश्र अमर —

वायुमण्डल, शुद्ध वस्तु भोजन ओ शान्त वातावरणक महत्त्वकेँ हृदयंगम करबाक हेतु उद्यत नहि रहि पबैत छथि। भौतिक सुखक आगाँ शारीरिक श्रमकेँ के पूछय, मानसिक श्रम करबाक हेतु ओलोकनि उद्यत नहि रहैत छथि। परिणामतः अरबक अरब कर्ज विदेशसँ प्राप्त कऽ संचालित योजना फलीभूत नहि भऽ पाब रहल अछि आ देशमे बेकारक संख्या दिनानुदिन बढ़ले जा रहल अछि।

परन्तु प्रश्न उठैत अछि जे सर्वप्रथम शिक्षण संस्थाकेँ ग्राम्य क्षेत्रमे कोना लऽ गेल जाय ? प्राचीन भारतक शिक्षा-व्यवस्थाक इतिहास तँ यह कहैत अछि जे नागरिक जीवनकेँ के पूछय, ग्राम्यो क्षेत्रसँ दूर उपवनक शान्त वातावरणमे शिक्षण संस्था होइत छल, जतऽ सामाजिक जीवनक कलुष कोमलमति छात्र समुदायकेँ स्पर्श नहि कऽ सकनि। निष्कलुष भावें ओ छात्रलोकनि अपन प्रतिभा ओ प्रवृत्तिक अनुसार शिक्षा प्राप्त कऽ कर्मक्षेत्रमे अवतीर्ण भऽ सकथि।

सम्बद्ध भऽ गेल अछि जाहिसँ ग्राम्य-क्षेत्रक वायुमण्डल विषाक्त भऽ गेल अछि। ओ सौजन्य, ओ सौहार्द, ओ पवित्र विचार तथा ओ सौमनस्य कतहु देखबामे नहि आबि रहल अछि। ग्रामीण जीवनक सभसँ पैघ विशेषता ई छल जे सभक सुख दुखमे सभ समान रूपेँ हाथ बँटवैत छलाह, एकक इज्जति, एकक प्रतिष्ठा, एकक मर्यादा सभक अपन इज्जति, अपन प्रतिष्ठा ओ अपन मर्यादा होइत छलैक, किन्तु ई मताधिकार, ई निर्वाचन, ई नवीन शासन प्रणाली गाम गाममे, घर घरमे ताहि रूपक वैमनस्यक जन्म दऽ चुकल अछि जे सौमनस्यक कल्पनो आव ऐतिहासिक विषय बनि चुकल अछि। तेहना स्थितिमे ग्रामांचलमे शैक्षणिक प्रतिष्ठान मनोवांछित फल दऽ सकत से सन्देहास्पदे।

दोसर प्रश्न ई अछि जे जँ ग्रामांचलमे शिक्षण संस्था होयबो करत तँ ओ अंचल नगरक दुर्गन्धसँ बांचल नहि रहि पाओत। आध्यात्मिक निष्ठा, सदाचार, सरल ओ सादा जीवन हीनताक परिचायक भऽ गेल अछि, आदर्शक अथवा महत्ताक द्योतक नहि। आहार विहारमे सात्विकताक कतहु लेश नहि रहि गेल अछि। भारतीय दृष्टिकोणसँ कोनो विषयकेँ सोचब कोनो काज करब, आइ पिछड़ल विचार मानल जाय लागल अछि।

यदि कतहु ग्रामांचलमे छोटछिन महाविद्यालयक स्थापना भऽ गेल अछि तँ संगहि छोटछिन सेलून ओ केविनक संग छोटछिन सिनेमा भवन सेहो बनि जयबामे विलम्ब नहि लगैछ। संयम नियमक चर्चो समाजसँ उठि गेल, पालनक कथे नहि। सभकेँ समान अधिकार जे प्राप्त भऽ गेल छैक ?

अतः युवकलोकनिक ध्यान नगरक बनावटीपनसँ हटाकऽ ग्राम्यजीवनक उच्चादर्श दिस लऽ जायब परम कठिन भऽ गेल अछि। भौतिकवादक बढ़ैत एहि प्रभावक युगमे जहिना आधार शिक्षाक महात्मा गान्धीक योजना निष्फल भऽ गेलनि तहिना नवयुवकोक ध्यान दोसर दिस लऽ जयबाक कल्पना आकाश-कुसुमे सिद्ध होयत।

मिश्रटोला, दरभंगा।

जो, सरकार ! हमर नाम मि

मणिकान्त। पचीसम वर्ष होयत भूत
ऊँचाई पाँच फीट दस ईंच-बेस
भारी-भरकम काया, एक बर
पटना जंक्शनपर लेल गेल ओ
मोताविक डेढ़ मोनसँ उबरे।
चोड़गर-सामान्य रूपेँ चौतार
फुनौलापर अड़तीससँ एक्के
कम्म। बाँहि, जाँघ आ सम्पूर्ण देह
सोटल-बान्हल। रंग नै किमुन
वान सन जमुनियाँ आ नै खयाल
सन पिताम्वरी.....
गोराइ कहि सकैत छी। मायक
ने खूब ओठियाँ आ नै घाँ के
.....हँ, तखन घनघोर कारो
घनगर धरि अवश्ये। सोटि-
देने आ ताहमे गमकौआ तेल नग
वामा दिससँ एक तेहाइपरसँ
देने बडु आकर्षक। ई नहि बूझि
जे हम कोनो ड्रामा कम्पनीक
छी.....। देहक बान्ह-का
जँ अहाँ हमरा पहलमाने बूझि ली
अहाँक दोष। सत्य पूछी तँ हमरा
दिलीप कुमार बनबाक अछि आ
दारा सिंह। हम मूर्खो नहि छी। ए
ए० छी। डिपू-इन्-एड० प्राप्त
आब तँ बूझि गेल होयब हम क
जोगरक छी ? अथवा की क
होयब..... ? बेस तँ अ
मुँह दुआरि.....। हम मास्
करैत छी....., नेना-भुटका
पढ़बितहुँ तँ गुरुजी कहैत लोक
युवक-युवतीकेँ पढ़ोलासँ प्रोत्
भऽ कऽ रहितहुँ, से हम बीचबिच
वयसक छोड़ा-छोड़ीकेँ पढ़वैत
.....तँ मास्टर.....मास्टर
—प्रणाम सर' हे लिअ...
—'प्रणाम मास्टर' देखैत
चलू.....।
—'प्रणाम मास्टर साहेब' ई
हमरे कहलक।
—'मास्टरजी प्रणाम'। ह
चटियाक माय।
—'प्रणाम..... प्रणाम...
चटियाक बाप।
कतेक लेब एहिना बरिसत छ
प्रणामक वर्षा.....बगली न
खोलैत छी.....बोरा ने ढोल क
.....कंसने जाउ.....बोरा
.....बोरा.....गाड़ीक गाड़ी
बेस तँ कनेक आगाँ बढ़.....
अहाँ खाली हमरा मुँह दिस तक
रहब। हम कोना दाँत निपोड़ि क
सूगा जकाँ स्टपर स्ट लग्न नै जायब।

तैयारी

: श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' :

धरती देखुन उझिलि बखारी
चाहय क्यो न अन्न सरकारी
लऽ मुट्ठीमे जान समरमे लड़ल बहादुर सेना
आयल पार कृषक बोनिहारक आइ चुआय पसेना
मूड़ी काटि अकालक गाड़ी
भूख न देअय फेर मुड़ियारी
कोटि कोटि धरतीकेर बेटा मारय चोट नडाड़ा
शास्त्री लाल बहादुर देलनि जय किसानकेर नारा
भिड़ि कऽ करय काज नरनारी
उपजय धान गहूम खेसाड़ी
बनि प्रधान मन्त्री क्यो देशक शासनसूत्र सम्हारथि
किन्तु धानमन्त्री किसान मिलि अगिले मुहड़ा मारथि
पाबथु परसल थार नोथारी
भरि भरि थारी पुनि घरवारी
धरब कोदारि करब भू सेवा मेवा पायब निश्चय
माता धरती सुनती विनती फुजत खजाना अक्षय
परती रहत न बाड़ी-शाड़ी
हर्षे गमकत केसरि-क्यारी
सजला कमला गंगा यमुना सरयू हृदय जड़ाबथि
तखन किए भारतवासी अनका लग माथ मुड़ाबथि
चलतनि अनपुरनाक सवारी
भरतनि खोपड़ी महल अँटारी
बलिदानी बलि चढ़ा चढ़ाकऽ कयलनि देशक रक्षा
भूख-युद्धमे विजय करक हित बान्हि जोरसँ कच्छा
कृषक वर्ग कयल तैयारी
ढूँढबो विसरल अपन बुढ़ारी



साधारणतः सुधंग लोक ओहन
व्यक्तिके कहल जाइत छैक जे सांसा-
रिक छल-कपटसँ सर्वथा असम्पूक्त
रहैत अछि, किन्तु एकर अर्थ ई नहि
बुझि लेबाक चाही जे एहन सुधंग
लोक निरक्षर, अज्ञ अथवा मूर्ख होइत
अछि ।

मिथिलामे तँ किछु वर्ग एहन
रहैत रहल अछि जे शास्त्रीय योग्यतामे
अद्वितीय रहितो सांसारिक कपट
प्रपंचसँ एकदम एहि रूपेँ अनभिज्ञ
रहल अछि जे सुनि अहाँ आश्चर्य चकित
भऽ जायब । एहन सुधंग लोककेँ
सुधबलेल, भोलानाथ, परमहंस आदि
नाम सँ सेहो अभिहित कयल जाइत
अछि ।

किछु लोकक अलौकिकता तँ
अत्यन्त समाज प्रसिद्ध रहल अछि ।
एहन लोकक आत्मा ततेक पवित्र
रहैत छनि जे संसारमे लुच्चा-लम्पट,
चोर-बदमास, ठग-बैमान आदिओ
होइत अछि ताहिपर विश्वास नै रहैत
छैक यद्यपि नीति शास्त्रमे कहल
गेल अछि—

मृगमीन सज्जनानां तृणजल
सन्तोष विहित वृत्तीनाम् ।

लुब्धक धीवर पिशुना निष्कारण
वैरिणो जगति ॥

ओ पढ़ने रहैत छथि तथापि अपन
अन्तःकरणक पवित्रताक कारणेँ
हुनक ई विश्वास बढ मूल रहैत छनि
जे हम जखन आनक अहितक चिन्तन
नहि करैत छिएक, ककरो फूसि कथा
नहि कहैत छिएक, ककरो नहि ठकैत
छिएक तँ हमर अहित चिन्तन किएक
क्यो करत ? हमरा फूसि कथा किएक
क्यो कहत ? हमरा किएक क्यो ठकत ?

दोसर बात एहन लोक शास्त्र
चिन्तनेमे ततेक निमग्न रहैत छलाह
जाहि कारणेँ सांसारिक छल छद्मसँ
परिचितो होयबाक अवसर हुनका नहि
होइत छनि । वस्तुतः भौतिक सुखक
आकांक्षासँ अनेक व्यसनक बशीभूत
लोककेँ जतेक सांसारिकताक प्रति
आसक्ति रहैत छैक ततेक आसक्ति
ओहन लोककेँ कोना रहैतक जे
व्यक्ति व्यावहारिक जीवनमे एहि
नीति-वाक्यकेँ उतारि लेलक अछि
जे—

सन्तोषामृत तृप्तानां यत्सुखं शान्तं
चेतसाम् ।



— श्रीचन्द्रनाथ मिश्र अमर —

कुतस्तद्धन लुब्धानामितश्चेतश्च
धावताम् ॥

मिथिलाक एक एहने सुधंग
किन्तु उद्भट विद्वानक प्रसंग जन-
श्रुति अछि जे ओ काशीक बजारमे
एक ठाम श्रोखण्ड चन्दन कीनऽ
गोलाह तँ बनियाँ एकटा आठ दस सेर
वला गेंडो देखबैत कहलकनि जे
ई शुद्ध मलय पर्वतसँ मडवाओल श्री
खण्ड थिक । आब तँ शुद्ध श्रीखण्ड
विदेश पठा देल जाइत अछि तँ
भारतमे शुद्ध श्रोखण्ड बिकाइते नै
अछि । बजारमे श्रोखण्डक नामपर
विकायवला वस्तु वस्तुतः श्रीखण्डक
वृक्षक लग रहनिहार आन आन काठक
खण्ड रहैत अछि जे संसर्गसँ श्रीखण्डक
सुगन्ध ग्रहण कयने रहैत अछि हमरो
लग ई आखरोये टुकरा थिक । एहन
श्रीखण्ड तँ आब आन ठाम भेटबो
नहि करत । हमरो गोदाममे कतहु
दोग दागमे पड़ि गेल छल तँ बाँचल
रहि गेल, नहि तँ कहिया नै बिका गेल
रहैत । अपनेकेँ एहिमेसँ कतेक चाही ?
आ कि सभटा तौल दियऽ ?

एखनो अपना समाजमे निश्छल अन्तरात्मा रखनिहार बहुतो
सुधंग लोक जीवित छथि ।

पण्डितजी सोचलनि जे जखन
भविष्यमे एहन विशुद्ध वस्तु भेटबे नै
करत, तखन सम्पूर्ण गेंडो किएक नहि
लऽ लेल जाय ? डेराक खर्च देखल
जयतँक । से सोचि बजारक भावसँ
तीन बड़ दाम दऽ कऽ संगमे जे टाका
रहनि से दऽ देलथिन आ सम्पूर्ण
गेंडो लऽ कऽ डेरापर चल अयलाह ।

कतेको व्यक्ति द्वारा कहलौ उत्तर
जे बनियाँ अपनेकेँ फूसि कथा कहि कऽ
ठकि लेलक, पण्डितजी ओहि बनियाँक
नेक नीयतिपर अविश्वास करबाक हेतु
उद्यत नहि भेलाह ।

मिथिलाक दिग्गज नैयायिक
पं० षष्ठीनाथ मिश्रक प्रसंग सेहो

कतिपय जन श्रुति अछि । एकटा मात्रक
उल्लेख कऽ हुनका लोकनिक शुद्ध
अन्तरात्माक दिग्दर्शन करा रहल
छी । नैयायिकजी प्रातःकाल बाह्य
भूमि दिस विदा भेलाह तँ एकटा
विद्यार्थीकेँ जल आनि देबऽ कहलथिन
ओ विद्यार्थी विद्यालयक पार्श्ववर्ती
पोखरीमे लोटामे जल भरि कऽ आनि
देलाथिन ।

सन्ध्या काल विद्यालय समाप्त
भेला उत्तर सभ गोटे शिवमन्दिरक
चबूतरापर बसल छलाह, नैयायिक
जीकेँ पटापटि छिक्का होइत छलनि ।
एक व्यक्ति सहानुभूति प्रदर्शित करैत
कहाथिन—नैयायिकजी ! कोन
कुसंयम कऽ देलएक जे एतेक सदी
भऽ गेल अछि ?

नैयायिकजी अपन दिन भरिक
दिन चयक सविस्तर वर्णन करैत
कुसंयमक कोनोटा कारण नहि देखौल-
थिन, किन्तु ओहि वर्णनक क्रममे
ईहो कहलथिन जे प्रातःकाल सदीक
कोनो पूर्वाभास नहि छल । यँह
विद्यार्थी तँ बाह्यभूमि जयबाक हेतु
जल आनि देने छलाह । की ओ
विद्यार्थी ! विद्यार्थी हँमे हँस मिलबैत
कहलथिन—जी भिनसरमे तँ हमहाँ
अपने केँ पोखरि दिस जयबाक हेतु
पोखरिसँ जल भरि कऽ आनि देने
छलहुँ । तखन तँ सदी तदीक कोनो
लक्षण नहि छल ।

ओ व्यक्ति हँसी करवाक दृष्टिये
कहलथिन—अपने पोखरिक पानि

महाराज दरभंगाक संस्कृत
महाविद्यालयमे एक प्राध्यापक छथि ।
ओ बेचारे बहुत दिन पर छुट्टीमे गाम
गेल छलाह । जखन छुट्टी समाप्त
होबऽ लगलनि तँ विद्यालय जयबाक
तैयारी करऽ लगलाह । मोटरी चोटरी
बन्हाक जागाडमे लागल देखि बुद्धा
माता विज्ञासा कयलथिन—बोले
रे ! देखि छियह मोटा चटा बनेन ।
एतेक दिन पर गाम अयलह अछि तँ
दू चारि दिन आरौ रहि जाह तखन
चल जँहऽ ।

पुत्र उत्तर देलथिन—माय !
विद्यालय फुजैत अछि, नहि जयबैक
तँ गरहाजिरी भऽ जायत । मासिक
वेतनमे काटि लैत ।

माय कहलथिन—महाराजकेँ तँ
विद्यालय थिकनि । अपने महाराज
नहि छथि, मुदा महारानी लोकनि तँ
छथिनहँ । जँ वेतन काटि लैह तँ
महारानीकेँ जाकऽ कहि दिहौनि ।
तखन तँ ककरो साहस नहि होयतनि जे
वेतन काटि लैथुन ।

पुत्र उत्तर देलथिन—माय !
आब, तँ महाराजक विद्यालय नहि
रहलनि ।

—‘तखन’ ?

—‘आब सरकार लऽ लेलकैक’ ।

—‘सरकार के ?’

—‘सरकार माने गोरमिण्ट’ ।

माय कहलथिन—गोरमिण्टकेँ
तँ बाल बच्चा होयबै करतँक । ओ
की नहि बुझतँक जे एतेक दिनपर
बाल बच्चाकेँ देखबाक हेतु गाम गेल
छथि तँ दू दिन देरी भऽ गेलनि अछि ।
एखन दू चारि दिन रहि जाह ।

पुत्र कहलथिन—माय ! गोर-
मिण्टकेँ बाल बच्चा नहि होइत छैक ।

ताहिपर माय टिप्पणी कयल-
थिन—सोआइत गोरमिण्टा एतेक
नहिर छहर, बान्ह सड़क बनबैत छैक ।
धीया पूता छैके नहि तँ एतेक धन लऽ
कऽ बेचारा की करत ? बुझौत अछि
जे जीबैतजी धर्म खत्तामे लगा दी ।
मुदा बाउ रे ! तोरो कपारमे भगवान
निस्सन्तानेक नोकरी लिखि देलथुन ।
एतेक दिनधरि महाराजक नोकरी
कयलै तँ हुनको कोनो बाल बच्चा
नहि आ जरलाहा एहि गोरमिण्टोक
नोकरी करऽ लगलह तँ ईहो निपुत्रे ?
एखनो अपना समाजमे एहि प्रकारक
निश्छल अन्तरात्मा रखनिहार बहुतो
सुधंग सुधंगलोक जीवित छथि ।

लऽ कऽ शौच कयलएक तँ तँ नै सदी
भऽ गेल ? नैयायिकजीक दृढ़ धारणा
भऽ गेलनि जे सदी होयबाक एक मात्र
यँह कारण भेल अछि आ एहि हेतु
ओहि छात्रक आलस्य तथा अदूर-
दर्शिताक हेतु बहुतो दिन धरि मोनमे
क्षोभ रहलनि ।

अस्तु ! ई तँ कनेक मनेक प्राचीन
युगक लोकक गप्प कहलहुँ । किन्तु
स्वतन्त्र भारतक एहि नव जागरण
कालोमे एहन सुधंग लोक सभ जीवैत
छथि जनिक अलौकिकता पूर्ण गप्प
सभसँ हुनक अन्तरात्मा-निश्छलता
प्रतिबिम्बित भेटत ।

हरिदेवा गोहडि कऽ छूटल—
हमरा आव कहाँ अछि एकोटा पाइ ?
मोगी छटलि ओकरापर—
एखन तँ खयबँ-पीवे कयलहुँ अछि
ताहीमे सभ सठि गेल ? हमर गहना
सभ तँ एखन बाँकि अछि ! एही
कमाइपर घरवाली राखब ?

हरिदेवा कहलकैक—जका
गहना नहि होइक से घरवाला नहि
होयत ? जे रुपैया देलियोक अछि
तकर हिसाब दे तखन ने ! सभ
दिन कहत जे हमरा मोने खराब अछि !

मोगी डपटि कऽ बाजलि—
हम की कोनो पढ़लि-लिखलि छी जे
हिसाब राखू लिखि कऽ ? हम तँ सोझ
बुझ छिए जे आव रुपैया खतम भऽ
गेलैक, खर्चा भऽ गेलैक ।

हरिदेवा आइ पीने छल कम ।
कारण छलैक जे तीन दिन पहिनेसँ
उधारी दैत छलैक पसिनियाँ
आ आइ एकऽमे 'नहि, नहि' कहैत
जा रहलि छलैक आ अन्तमे एक
छोटी दऽ कऽ वात राखि देने छलैक ।
सेहो कन्हूका वादापर ! तँ पाइक
खोज छलैक एतेक आइ । हरिदेवाक
भक् आव खुजल छलैक । ओ लपकि
कऽ घरवालीक आँचर धयलक आ
कहलकैक—एतेक अन्हरे ! एक
हुजार रुपैया लयलहुँ से सभ तीने-
चारि मासमे उड़ा देलक ! हमर
रुपैयाँ एखने लावऽ ने तँ घरमे रहब
दुलभ कऽ देबक !

मोगी जनैत छल जे पुन
कोनो काजक नहि अछि आ जखन
परदेश छल तखनो हमरा लेखे नहिये
छल आ एखनो नहि अछि । एकरा
लग जेहने रहने-तेहने बिनु रहने ।
आइ हमहुँ नौ कि छी कयै लेत छी ।
ओ हरिदेवाक हाथसँ अपन आँचर
छोड़वैत बाजलि—हमर नया
छोड़त कि नहि ? बियाह करबामे
बड़ मुन बूझलैक आ घरवाली
समारयमे डाँड़ डोलैत छैक ? एकरासँ
तँ गामक बुढ़वा सभ थैहर अछि जे
मरितो-मरितो एकटा कऽ दऽ जा
छैक कोड़ामे ! ई तँ मोगी रहैत
सँह बड़ियाँ होइतैक ।

हरिदेवा गुम्म भऽ गेल ! खिसि
याकऽ बाजलि—तँ लऽ ने आ एकटा
अर्थ बूढ़ बजा कऽ तोँ डोल बजविहे
आ ओ मजोरा दुनदुन करती !

राति ततेक बोति गेलैक जे
पड़ोसक आइ न सभमे सुनल लोक
सभक निद्रा पड़ा गेलैक डोहपर !

की ई विश्वास कयल जा सकैत अछि ?

श्री भोला शास्त्री मन्त्रिमण्डलक
त्यागपत्रक फलस्वरूप विहारक विधान
सभा भंग भऽ गेल आ जनप्रतिनिधि-
शासनक स्थानपर राष्ट्रपति शासन
तावत धरि लागू रहत जा धरि
मध्यावधि निर्वाचन नहि भऽ जाइत
अछि ।

राष्ट्रपति शासन कालमे राज्य-
प्रशासनकेँ निरंकुश नहि होबऽ देल
जायत ई आश्वासन आकाशवाणी
एवं पत्रप्रतिनिधि सम्मेलनमे विहारक
राज्यपाल श्री नित्यानन्द कानूनगो
द्वारा विहारक जनताकेँ भेटि चुकलैक
अछि । एहि आश्वासनक क्रममे
राज्यपाल महोदय स्पष्ट निर्देश कय-
लनि अछि जे ई राज्य कानूनक
राज्य होयत जाहिमे निर्धारित नियम-
कानूनक अनुसार सब काज होयत ।
हुनक ईहो कय छनि जे कमसे कम
किछ मास धरि निर्वाचित विधान
सभाक सजग सशक्त विवेचनक लाभसँ
वंचित रहैत सरकारकेँ अपन काज

सभ अकच्छ छल तीन माससँ दुनूक
हाँ हाँ ही ही से आ आइ ई महाभारत
सभकेँ आश्चर्यमे रखने छल ।

हरिदेवाक आँखि लाल होइत-
होइत लागि गेलैक आ भोरे उठल
तँ घरक फाटक खुजल छलैक । आगूमे
पसरल घरारोक दुकड़ो सभ ओहिना
पसरल हँसि रहल छलैक । गिरहस
आइ नमे ठाड़ भऽ कऽ हाँक दऽ रहल
छथिन !! 'रे हरिदेवा ! तौ
कमाइ छेँ ने किएक ? आइ हम नौ
कि छी कयै कऽ एहिठामसँ जायब ।
हरिदेवा दुकुर-दुकुर फूजल फाटक
दिस तर्कत रहल... । ओकर
मोन रोहरा गेलैक एहि बातकेँ
—“नौ कि छी ?”

उच्चतर माध्यमिक बिद्यालय, कम-
तौल, दरभंगा ।

करऽ पड़ैत मुदा हमर प्रतिनिधि-
लोकनि तँ रहबै करताह । सम्पूर्ण
भारतसँ निर्वाचित भऽ आयल प्रति-
निधि केन्द्रसँ एहिठामक प्रशासनकेँ
देखल करताह तथा एकर विवेचन
करताह । अर्थात् केन्द्र द्वारा राज्य-
शासित होयत ।

एहि आश्वासन ओ स्पष्टीकरणक
वाद विहार राज्यक राज्यपालसँ
मैथिलीभाषी जनता विनम्र निवेदन
करतनि जे केन्द्र सरकार अथवा
राज्य सरकार जाहि शिक्षानीतिक
स्वीकार कऽ तदनुकूल कार्य करैत
आयल अछि ताहिमे राज्य द्वारा
भेल कोनो त्रुटिकेँ परिष्कृत करवाक
निराकृत करवाक ओ त्रुटिकेँ दूर

उपस्थितो कयल गेल अछि । आब
ओहि स्मारपत्रमे मैथिलीक प्रति जे
अन्याय भऽ रहल छैक तकर पूर्ण
विवरण उपस्थित कयल गेल अछि ।
हम एतबे संकेत करब पर्याप्त बुझैत
छी जे १९४६ ई० मे राज्य सरकार
जे निर्देश तत्कालीन डी. पी. आइ.क
पत्र-संख्या ३१८६।४००-४६ दिनांक
२२ मार्च, '५० द्वारा विहारक सभ
जिलाक जिला परिषदक चेयरमैन-
लोकनिकेँ देने श्रुति ताहि निर्देशक
पालन अद्यपि मैथिली क्षेत्रमे नहि
कयल गेल अछि । एहि १६ वर्षमे
एहि ठामक कतोक नेनाक प्रतिभाकेँ
कुठित कयल गेलैक अछि से विचार-
णीय अछि ।

दोसर दिस केन्द्रीय सरकारक
सर्वोच्च प्रतिनिधि संस्था साहित्य
अकादमी मैथिलीकेँ स्वतन्त्र भाषाक
रूपमे मान्यता दैत मैथिलीक मन्थकेँ
पुरस्कृतो कऽ चुकल अछि ।

तेहना स्थितिमे सम्प्रति राष्ट्र-
पतिक शासन कालमे विहारक राज्य-
पाल महोदयक कर्तव्य भऽ जाइत
छनि जे मिथिला सांस्कृतिक परिषद

ओना मैथिलीभाषीकेँ सेहो सजग होयबाक अवसर पुनः तुल्यलनि
अछि । एहँ मध्यावधि निर्वाचन अपन जगत चेतनाक पंचिय
देत ह से विश्वास कयल जा सकैत अछि ?

करवाक उत्तरदायित्व केन्द्र सरकार-
पर छैक । यदि राज्य सरकार द्वारा
स्वीकृत कोनो नियमक उल्लंघन आइ
धरि होइत रहल अछि तँ आशा
कयल जायत जे केन्द्र ओहिपर
निष्पक्ष रूपेँ अवश्य विचार करत ।

ई निर्विवाद सिद्ध अछि जे
राज्य सरकार कतिपय राजनीतिक
कुचक्र कारणेँ एहि राज्यक एकमात्र
साहित्यिक भाषाकेँ, जे अपन गरिमा-
मय इतिहासक संग आइयो अपन
मधुरिमाक हेतु साहित्य जगतमे प्रसिद्ध
अछि, आइ धरि उपेक्षित रखने रहल
अछि । एहि बीच विभिन्न तरहक
सरकार बनल, बिगड़ल, किन्तु मैथि-
लीक प्रसंग ककरो नीतिमे परिवर्तन
नहि आयल ।

श्री भोला पासवान शास्त्री एक
मुख्यमन्त्री रूपमे स्मारपत्रक माड.
अनन्ध कयलनि जे हुनका समक्ष

कलकत्ताक नेतृत्वमे विभिन्न संस्था
द्वारा विधान सभाक समक्ष जे अनशन
कयल गेल छल आ अनशन समाप्त
करवाक हेतु तत्कालीन मुख्यमन्त्री
द्वारा जाहि स्मारपत्रक माड. कयल
गेल ओ जे स्मारपत्र अर्पित कयल
गेल अछि, ताहिपर विचार करथि ।
संगहि समस्त भारतसँ निर्वाचित
प्रतिनिधि लोक सभामे एहि प्रश्नपर
विचार करथि तदर्थ मैथिलीभाषी
क्षेत्रक लोक सभाक हेतु निर्वाचित
सदस्यलोकनिक उत्तरदायित्व भऽ
जाइत छनि जे ओ लोकनि लोक-
सभाक ध्यान मैथिलीक एहि उपेक्षा
दिस आकृष्ट करथि ।

राज्यपाल महोदय जेना आश्वा-
सन देलनि अछि जे ई राज्य कानूनक
राज्य होयत जाहिमे सब काज
निर्धारित नियमक अनुसार होयत

ओ रिक्शावालाके कहलकै—

“टंक खलासीके दस दहक, उपर धुस देतैक आ डालो लेने आबस भीतर।”

ओ एक बेर फेर रिक्शावाला दिस तकलक, ओहिना । उपरसँ नीचाँ, जेना अपना विश्वासक समर्थन करैत हो । एक छन लागल होनतैक, आ ओ धड़धड़ा कऽ रिक्शापरसँ छड़पे आयल । सड़रपर सँडिल भट दस बजलैक । एक बेर ओइनोके उछेहि कऽ सरियाँलक आ बस दिस बढ़ि गेल ।

बस देखिते देरी अगुविधा बुझय-लैक । गेट धरि लोक काँचल छैक । एक छनमे अगुविधाक सभ टा भावना बिला गेलैक । भोड़ तँ रहिते छैक, तखन भोड़सँ कोन डर ? आ ओकर मोन कहैत छैक जे एहि भोड़वाला देशमे कोनो वस्तुमे भोड़ नहि हो तँ देशक अपमान थिक ने !

ओ बसक रेलिड. दिस लकल । ओकरा देखिते आगाँ लोक बाट देबऽ लागल । युवतो भेलासँ ओकरा एहि पुरुष-प्रधान देशमे एतेक सुविधा छैक । युवतोकेँ लोक सभसँ अधिक शोघ्र नोटिस लैत अछि । ओकरा लोक ताकत आ अबस्स ताकत । नपुंसक दृष्टिये, घृणाक दृष्टिये, ईर्ष्याक दृष्टिये । ओ अपना ज्ञान-प्राप्तक भेलाक बादसँ एतबे संघर्ष कऽ रहल अछि—जे ओ सहज होअय । सौँसे संसारकेँ सहज बनायब तँ उत्कृष्ट कल्पना थिकैक, मुदा, ओ ने धरि सहज भऽ सकब, तकर ओ

तदनुसार एही कालमे मैथिलीकेँ पंक्स उद्धार भऽ सकैत छैक । सम्पूर्ण मैथिलीभाषी क्षेत्रमे मैथिलीक माध्यमसँ पढ़ाइक हेतु पोथी ओ शिक्षकक व्यवस्था यदि भऽ सकल तखने मैथिलीभाषी जनता एहि आश्वासनकेँ सत्य मानत ।

ओना मैथिलीभाषीकेँ सेहो सजग होयबाक अवसर पुनः तुल्यजनि अछि । एही मध्यावधि निर्वाचनमे अपन जाग्रत चेतनाक परिचय देताह से विश्वास कयल जा सकैत अछि ?

मिथ दोजा, दरभंगा ।



— श्री जीतकाल —

प्रयोग कऽ रहल अछि । ताहूमे शिक्षिता एकतरि यात्रा करऽवालो युवतोकेँ लोक कखनो झोंगर राहल मामु, कखनो सड़ल मामु, कखनो अनेर बीआ कऽ आबि गेल बकरीक बच्चा जकाँ तकैत छैक ।

मुदा, तकरैत धरि अबस्स छैक । तँ ओकरा बिनु कहने बाट भेटल जा रहल छैक । मुझयामे सेन्हा फाड़ने जा रहल अछि । बहुत पहिने एना भोड़मे दुकबाक ओकर साहस नहि होइतैक हरदम अपन रोम-रोमकेँ स्पर्श आ दृष्टिसँ सचेत आ गुदगुदाइत अनुभव करैत रहैत... मुदा, ओ ओ डिस्टेंड नहि होइत अछि, धट्टा-पिट्टा पड़ि गेल छैक । कोचम काँचा भोड़ । लोक ओकरा पीचैत नहि छैक । वैह लोक सभकेँ धकियबैत आगाँ बढ़ल जाइत अछि । भोड़, भोड़, भोड़ । हाथ रे भोड़ ! कहू तँ बस बनल दरभंगामे आ लहेरिया-सरायमे एतेक भोड़ । बसवना सभ एके टा गे देत, सेहो पाछाँमे आ लेडोज सीट देत एकदम आगाँ । जे ग बसमे चढ़निहारि लेडो यात्रा करऽ नहि, स्वयंवर करऽ अबैत हो । दुनू भाग गद्दीपर ओइठल राजा आ राजकुमार सभकेँ निहारैत, सभक कोइकेँ धकियबैत, आँखिकेँ सेदैंत बढ़ि जाउ वरमाला झुलबैत-झुलबैत चल आउ लेडोज सीटपर... तकर बाद अनुभव करैत रहू पीठ आ बाँ आ काँखार अदृश्य स्पर्श ।

ओ डेलि-ठालि कऽ आगाँ धरि पहुँचि गेल । आक्रान्त सीटक भति-काइकेँ आग्रह कयतक—“बच्चाकेँ कोरमे लऽ लियऽ, हमहूँ बैसब ।”

मोगी मूड़ी उठा कऽ तकलक, जे ग आड़ि जायत आ लथाड़ फेंकत, जेना हाथ चमका-चमका कऽ उकटा-पंचोसँ शुरू करत आ झोंटा-झोंटोमे अन्त करत । मुदा, एके छानक बाद ओकर आँखिक इजोतेमे एकटा स्पष्ट

परिवर्तन भेलैक । ओ अपनो युगुकि गेल आ नेनोकेँ कोइमे उठा कऽ लऽ लेलक । ओकरा भेलैक जे ओकर आधुनिक पहिरन-ओइनक प्रभाव थिकैक, तँ कहल नहि करऽ पड़लैक, आ सभ्य भाषाक आ सभ्य दृष्टिक बिना बिचिमय कयने स्थान भेटि गेलैक ।

ओ स्थानपर बैसि गेल आ चाहलक जे रिक्शावाला जल्दीसँ ओकर डालो दऽ जाइक... जे ओ ओ हुमेसँ ‘इन्फोर्मिक रिड्यू’ बहार करत आ पढ़त । खालो बैसल रहै, तँ अनेर स्वयंवरक बोध सभ टा ध्यान । चिन्तनकेँ जाँतऽ लगैत छैक ।

रिक्शावाला एखनधरि भीतर नहि पहुँचलैक अछि । कतऽ देरी भेलैक ? कतहु... ? नहि, एना दिन-देखार नहि साहस कऽ सकैछ । एक बेर ओ अपन विश्वसक फेर भजारलक, ठाँके छलैक विश्वास । कतऽ जायत ओ ! खालो रहबाक कारण ओ दुनू तरहत्थोक आँखिक सोझाँ जोड़ैत पसारलक, आ फेर दुनू तरहत्थोकेँ माथपर लऽ गेल । हाफो । केश रुच्छ बुझयलैक । ठीके, ठीके रुच्छ छैक । भोरमे शंभू कऽ बाथरूमसँ बहर गेल छल । बड़ हड़बड़ी ने भऽ गेल रहैक !... हाथ ससरि कऽ केशक नीचाँ केशक संगे-संगे उतरऽ लगलैक । दू टा जुटो... । बिना रिबन, बिना फुदनाक दू टा जुटो... । ओकरा रिबनसँ घृणा छैक ओ रा जरत नृण छैक, ओ लह चहक रंगसँ घृ छैक । ओ स्वच्छ आ संयत आ सहज रहऽ चाहैत अछि । ने सिडार, ने धूरा आ कारिख, मात्र साफ आ सौम्य मनुख । लहक-चहकसँ ओकरा मोन पड़ि गेलैक अपन सहपाठिनी सभक वेस । एक बेर ओ अपन वेस दिस तकलक... साधारण सँडिल, मजगूत, साधारण उज्जर सलवार, उपरमे हल्लुक खयरी रडक सोफियानी छोटक कुरती... साफ आ मजगूत, नोलहक-चहक, नो गौडोनेस... ।

गौडीनेस मोन पड़िते ओकरा मोन पड़लैक अपन भाउज—मोस्ट गौडी वमन । हरदम सजले, हरदम फोटो धिचाबऽवाला मेक-अप, टिप-टॉप । आ, ओकरा मोन पड़लैक एक बेर ओ ओ ओकर भाउज गेल

रहय सिनेमा । ओ कहने रहै—
“भीजी, टिकट कटा लाउ ।”

—“गय दाइ, हमरा नहि होतै ।”

—“किण ? कयो काटि कऽ जायत ?”

—“इस्य । मुँहे प्रइका देव कटनिहारक...”

—“हम जाइ छी, टिकट लऽ घनै छी, एतऽ ठाढ़ि रहू प्रयया मने-मंग आउ । लाइनसँ बाहर ठाढ़ि रहब ।”

—“नहि गय दाइ । किच्छ ने होतै हमरा बूते ।”

ओकरा मोन छैक जे ओ अपना भाउजकेँ उपरसँ नीचाँ हियाकऽ तकने रहैक... आक्रमणक सोमा धरि कस्सलि आ पोतलि, मुदा पुरुषक हेँडे ठाढ़ि होयबाक कल्पनासँ भय-भीत... । आ ओ छानि स्वच्छ आ सामान्य, तथापि हेँजक हेँज पुरुषमे निर्विकार ठाढ़ि रहजवाली ।

ओ तकर बाद अपना भाउजकेँ लेने डी. सी.क डिप्टर पहुँचि गेल रहैक । गेट-कीपरकेँ पंचटकहो घरा देने रहैक आ कहने रहैक—“सीट दिखाओ ओर दो टिकट बनवाके ले आओ ।” गेटकीपर एक छन धरि ओकरा तकने रहैक जेना विरोध करितैक, मुदा ओकर आक्रामक मुद्रा देखैत शिथिल भऽ गेल रहैक ।

—“मेम साहेब, डाली । मेम साहेब !”

ओकर ध्यान-भंग भऽ गेलैक । ओ डाली शब्द सुनिते पाछाँ मुँहो घुरौलक, ओकर डाली हाथमे उठैत आबि रहल छलैक रिक्शावाला । ओ ऊठि गेल । कनेक बढ़ि कऽ हाथ पूरा नमरा कऽ ओकरा हाथसँ डाली लऽ लेलक । देखलक, सभ वस्तु सुरक्षित छैक ।

—“टंक चढ़बा देलहक ?”

—“है ।”

ओ रिक्शावालाक माथपर पसेना देखलक । जेना कनेक स्थायत अमौटपर नव बेर पतारि देल गेल होइक ।